नागौर भास्कर

सम्मेलन
'एकता का सूत्र बना वक्ताओं की .. 15

समस्या
भकरी में बन रही सीमेंट सड़क से होगा ... 16

आयोजन लाडनूं में दिखा सामाजिक सदभाव का अनूठा संगम। जैन-इस्लाम धर्म सम्मेलन का अदभुत आयोजन।

दिया अमन चैन भाईचारे का पैगाम, जैन विश्व भारती में पढ़ी गई कुरान की आयतें

भास्कर न्यूज • लाडनूं

जैन विश्व भारती का सुधर्मा सभा पंडाल..। जहां प्रतिदिन आचार्य महाश्रमण के प्रवचन होते हैं और जैन आगम व महावीर की वाणी गूंजती है..। वहां रविवार को माइक पर कुरान की आयतें पढ़ी जा रही थीं...। मौका था नूर फाउंडेशन और जैन विश्व भारती के संयुक्त तत्वावधान में जैन-इस्लाम धर्म सम्मेलन के आयोजन का।

सम्मेलन में इस्लाम व जैन धर्म में अमन चैन व भाईचारे का पैगाम विषय पर सभी वक्ताओं ने विचार रखे। दारुल उलूम इस्हाकिया जोधपुर के नायब मुफ्ती शेर मोहम्मद खान ने कहा है कि जो बात भगवान महावीर ने कही थी, वही बात इस्लाम मजहब सिखाता है। भूखे को खाना खिलाना, पानी पिलाना, जरूरतमंद को कपड़े पहनाना, दिल से मोहब्बत करना आदि दोनों समान रूप से कहते हैं। इस्लाम भी यही सिखाता है कि भूख लगे तभी खाना खाएं और एक रोटी की जगह खाली रखकर खाना खाएं। यह नब्ज को काबू में रखने का तरीका है और जैन धर्म में जय जिनेंद्र कहते हैं तो उसका मतलब ही इंद्रियों पर कंट्रोल रखना होता है। इसे इस्लाम मजहब भी मानता है। उन्होंने अपनी बात के पक्ष में कुरान की आयतें पढ़कर हवाला दिया।

उन्होंने ख्वाजा और बाबा फरीद का उदाहरण देते हुए कहा कि वे भी नब्ज को कंट्रोल में रखने की बात करते थे। मुफ्ती ने कहा कि आपस में भाईचारा को इस्लाम में महत्व दिया गया है और कहा गया है कि इंसानी दोस्ती होनी चाहिए। मोहल्ले में भाईचारा रखें, जानवरों को नहीं सताएं तभी अल्लाह तआला खुश होता है।

» लाडनूं . जैन विश्व भारती में जैन-इस्लाम धर्म सम्मेलन में सम्बोधित करते हुए नायब मुफ्ती शेर मोहम्मद खान।

आचार्य महाश्रमण ने कहा

आचार्य महाश्रमण ने अपने संबोधन में जैन धर्म में अहिंसा तत्व का उल्लेख करते हुए बताया कि आगम की भाषा में यह धर्म का अंग है और कोई धर्म, संप्रदाय ऐसा नहीं है जो अहिंसा को महत्व नहीं देता हो। विभिन्न जाति, भाषा, संप्रदायों में अनेकता में एकता खोजी जाए तो उसके अहिंसा ही वह तत्व है। सभी में अहिंसा की व्याख्या व महिमा मिलेगी। उन्होंने कहा कि जिसके चित्त में घृणा, द्वेष, हिंसा के संस्कार हैं, वह धर्म से दूर है। उन्होंने जैन धर्म के पुनर्जन्म सिद्धांत, आत्मा की चार गतियों, सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान, सम्यक चरित्र, कर्मवाद आदि के बारे में जानकारी दी तथा इस्लाम से जैन धर्म की तुलना करते हुए कहा कि कितनी ही बातें जैन व इस्लाम दोनों धर्मों में समान हैं। अहिंसा, संयम व तपस्या की बात दोनों में समान हैं। महाश्रमण ने एक सूफी संत का उदाहरण देते हुए कहा कि जो इंसान से प्यार करता है वो खुदा का प्यारा होता है। उन्होंने कहा कि सब धर्मों में परस्पर बैर-विरोध न हो और प्रेम व भाईचारा रहे, यह आवश्यक है। उन्होंने मैत्री भाव के बारे में बताते हुए कहा कि यह परस्पर सबको जोड़ता है और बांधता है। उन्होंने विभिन्न संप्रदायों के बीच मिलना-जुलना, तालमेल बढ़ाने की जरूरत बताई तथा कहा कि इससे मैत्री भाव बढ़ेगा।

वक्फ बोर्ड चेयरमैन लियाकत अली खां

मुस्लिम वक्फ बोर्ड राजस्थान के अध्यक्ष लियाकत अली खां ने कुरान की आयतें पढ़ी और उनकी तुलना जैन धर्म के णमोकार मंत्र से करते हुए कहा कि णमोकार मंत्र व कुरान की आयतों की एक ही भावना और अर्थ है। केवल शब्दों व भाषा का फर्क है। कुरान में भी सभी को नमन किया गया है। उन्होंने कहा कि ईश्वर एक है और वह सारी मानव जाति का पालन-पोषण धर्म, जाति, रंग, भाषा आदि के भेदभाव के बिना करता है। कुरान सारी मानव जाति को सत्यता का पाठ दिखाने वाली पुस्तक है। ईश्वर ने हर युग में अपने दूत पैगम्बर भेजे हैं, जिनकी संख्या एक लाख 54 हजार करीब बताई जा रही है। इस्लाम अमन-शांति, भाईचारा का प्रचारक है वह मानवता का शत्रु नहीं हो सकता। सम्मेलन में फतेहपुर की ख्वाजा नजमुद्दीन की दरगाह के सज्जादानशीन पीर गुलाम नसीर नजमी ने इस्लाम को भाईचारा व प्रेम बढ़ाने वाला धर्म बताया।

महाश्रमण का अभिनंदन

नूर फाउंडेशन की ओर से आचार्य महाश्रमण को अभिनंदन पत्र भेंट करके उनका सम्मान किया गया। सम्मेलन में समागत अंतरराष्ट्रीय जैन धर्म के संगठन जीतो के अध्यक्ष नरेंद्र बरमेचा, उपाध्यक्ष शांतिलाल कवाड़, मोतीलाल ओस्तवाल ने जैन धर्म और उसके संगठन के बारे में बताया। सम्मेलन में समाजसेवी सागरमल नाहटा, पालिकाध्यक्ष बच्छराज नाहटा, उपाध्यक्ष याकूब शेख, फुले खां हाथी खानी, महेश प्रकाश सांखला, सुरेंद्र चोरड़िया, सुरेंद्र घोंसल आदि प्रमुख लोग उपस्थित थे। संचालन आलम अली सिसोदिया ने किया। आखिर में चीफ शहर काजी सैयद मोहम्मद अयूब अशरफी ने उद्‌बोधन दिया।